संकट को विकास के अभाव से जोड़कर देखते हैं जबकि पर्यावरणवादी भारत जैसे विकासशील देशों में ऐसी कम्पनियों के होने को ही गलत मानते हैं। एक तरफ यह कम्पनी के विरुद्ध लगे बड़े आरोपों को खारिज करता है और दूसरी ओर संसदीय वामपंथी इसके विरोध को वैश्वीकरण के संदर्भ में एक बड़ी रणनीति के बतौर देखते हैं। उनका कहना है कि चूंकि यह कम्पनी निर्यात करती है, इसलिए इसे कमज़ोर करने की कोशिश की जा रही है ताकि इस धंधे से जुड़ी विश्व की अन्य कम्पनियों को तीसरी दुनिया के देशों से प्रतिस्पर्धा न करनी पड़े। इस दौरान उन्होंने 10 सुझाव पेश किए। इसमें शामिल हैं- और ज़्यादा प्रदूषणरोधी बांधों का निर्माण, ज़मीन पर शोला घास उगाना, रिसन रोकने के लिए नई पाइप लाइनें डालना और एक सामाजिक ऑडिट समिति का गठन। मुख्य बात यह है कि उन्होंने कम्पनी के निजीकरण का विरोध किया है।

इन घटनाक्रम से पर्यावरण आंदोलन के भीतर की विभिन्न सोच, वैचारिक धारणाओं और बहसों को देखा जा सकता है। हालांकि KIOCL के विरुद्ध गए सर्वोच्च न्यायालय के फैसले से खनन कार्य बन्द हो गया है। इसका अर्थ यह नहीं है कि पर्यावरण आंदोलन खामोश बैठ जाए। अभी तो कई बड़े मुद्दों पर ध्यान दिया जाना बाकी है - पीने का पानी, साफ हवा, शहरी जगह, पश्चिमी घाट में हरियाली। सबसे अहम काम है आंदोलन के अंदर बड़ी बहसों के लिए गुंजाइश बनाना और पर्यावरण व पूंजीवाद के बीच के विरोधाभासों को एक सही और स्पष्ट नज़र से समझने के लिए एक नई विचारधारा की रचना करना। *(स्रोत फीचर्स)*

विज्ञान समाचार

निशानेबाज़ मछली

इस मछली के निशाने पर तो क्रिकेट फील्डर भी फिदा हो जाएंगे। ऊष्ण कटिबंध में, खासकर दक्षिण पूर्व एशिया और ऑस्ट्रेलिया में पाई जाने वाली यह मछली धनुर्धारी मछली (आर्चर फिश) के नाम से मशहूर है। पानी के किनारे या पानी में उगे पौधों पर बैठे किसी कीट को यह पानी की धार मारकर गिरा सकती है। मुंह में पानी भरकर पिचकारी के समान उसे फेंकती है और कीड़ा टपक जाता है। मगर हैरत की बात तो अभी आगे है।

यह मछली प्रायः मैन्ग्रोव में पाई जाती है। यदि मात्र पानी की धार मारकर कीड़े को टपका दे, तो इसे भोजन थोड़े ही मिलेगा। गिरे हुए कीड़े को लपकने को वहां कई और जन्तु तैयार बैठे होते हैं। अतः जल्दी से जल्दी उस कीड़े तक पहुंचना भी ज़रूरी होता है।

फ्राइबर्ग विश्वविद्यालय, जर्मनी के स्टीफन शूस्टर का विचार था कि शायद यह मछली पहले से अंदाज़ लगा लेती है कि धार से मारे जाने पर कीड़ा कहां गिरेगा। उन्होंने पता लगाने की ठानी। इसके लिए एक टंकी में छः आर्चर मछलियां रखी गईं और ऊपर कीड़े लटका दिए गए। उन्होंने देखा कि कीड़े पर पानी की धार मारने के 100 मिली सेकण्ड के अंदर ही वे अपने शिकार की ओर लपक गईं। यानी देखने के बाद प्रतिक्रिया देने का उनका समय इंसानों से आधा ही है। और सबसे हैरत की बात तो यह थी कि वे उसी बिन्दु की ओर लपकीं जहां अन्ततः कीड़ा पानी में गिरा। कभी शोधकर्ताओं ने कीड़े को धागे से बांध दिया ताकि वह गिरे नहीं मगर तब भी मछली उसी जगह की ओर लपकी जहां वह गिरता।

दी जर्नल ऑफ एक्सपेरिमेंटल बायोलॉजी में अपने प्रयोगों का विवरण देते हुए शूस्टर बताते हैं कि एक बार पानी की धार मार देने के बाद ये मछलियां देखने को रुकती नहीं। ***(स्रोत विशेष फीचर्स)***